जांजगीर-चांपा मे 140 फीट ऊँचा पंडाल और 35 फीट की दुर्गा प्रतिमा बनी नवरात्रि की भव्यता का प्रतीक

Publisher

Published on 01 Oct 2025

नवरात्रि का पर्व भारत की आस्था और सांस्कृतिक धरोहर का सबसे जीवंत उदाहरण है। हर साल शारदीय नवरात्रि के आगमन पर देशभर में देवी दुर्गा की आराधना के साथ भव्य पंडाल और विशाल प्रतिमाएँ स्थापित की जाती हैं। इस वर्ष छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा जिले में नवरात्रि का उत्सव कुछ खास ही रहा, जहाँ श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र बना 140 फीट ऊँचा भव्य पंडाल और उसमें स्थापित 35 फीट ऊँची दुर्गा प्रतिमा। यह अद्भुत दृश्य न केवल स्थानीय निवासियों बल्कि दूर-दराज़ से आए श्रद्धालुओं के लिए भी किसी चमत्कार से कम नहीं था।

जांजगीर-चांपा का यह पंडाल धार्मिक आस्था और कला का संगम माना जा रहा है। इसे बनाने में स्थानीय कारीगरों के साथ-साथ राज्य के अन्य हिस्सों से आए कलाकारों ने महीनों तक मेहनत की। पंडाल की ऊँचाई 140 फीट रखी गई, जिससे यह आसमान को छूता हुआ प्रतीत होता है। इस ऊँचाई ने इसे पूरे क्षेत्र में एक अलग पहचान दिलाई है। वहीं इसके भीतर स्थापित 35 फीट ऊँची माँ दुर्गा की प्रतिमा ने इस भव्य आयोजन को और भी विशेष बना दिया।

प्रतिमा के निर्माण में पारंपरिक कारीगरी का सुंदर मिश्रण दिखाई देता है। मिट्टी, कपड़ा और प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल कर इसे तैयार किया गया है। माँ दुर्गा की दस भुजाओं से सुसज्जित यह प्रतिमा शक्ति और साहस का अद्भुत प्रतीक लगती है। विशेष बात यह रही कि प्रतिमा को सजाने-संवारने में भी स्थानीय संस्कृति और छत्तीसगढ़ी लोक कलाओं का विशेष ध्यान रखा गया। इसमें झाँकियों और पारंपरिक आभूषणों का प्रयोग किया गया जिसने इसे बेहद आकर्षक बना दिया।

नवरात्रि के दौरान यह पंडाल और प्रतिमा श्रद्धालुओं के लिए आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र बनी रही। सुबह-शाम आयोजित होने वाली आरती और विशेष पूजन में हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए। श्रद्धालुओं ने यहाँ देवी के दर्शन कर अपनी मनोकामनाएँ व्यक्त कीं और माता से परिवार, समाज तथा देश की खुशहाली की प्रार्थना की। इस भव्य आयोजन ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

जांजगीर-चांपा प्रशासन ने भी इस आयोजन को लेकर विशेष तैयारियाँ की थीं। सुरक्षा के पुख्ता इंतज़ाम किए गए और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए यातायात और व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया। आयोजन समिति ने साफ-सफाई से लेकर सजावट तक हर पहलू को बारीकी से संभाला। इस बार आयोजन में आधुनिक तकनीक का भी इस्तेमाल किया गया। पंडाल में आकर्षक लाइटिंग और सजावट ने इसे और भव्य बना दिया।

स्थानीय लोगों का कहना है कि इस तरह का आयोजन न केवल धार्मिक महत्व रखता है बल्कि सामाजिक एकता का भी प्रतीक बनता है। हर वर्ग और समुदाय के लोग इसमें शामिल होकर न केवल देवी की आराधना करते हैं बल्कि एक-दूसरे के साथ मिलकर त्योहार की खुशियाँ भी साझा करते हैं। इस आयोजन ने क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को भी नई ऊँचाई दी है।

आर्थिक दृष्टि से भी यह आयोजन महत्वपूर्ण साबित हुआ। पंडाल और प्रतिमा को देखने के लिए दूर-दूर से आए श्रद्धालुओं ने न

केवल स्थानीय व्यापार को बढ़ावा दिया बल्कि होटल, बाजार और छोटे व्यवसायियों की आय में भी वृद्धि हुई। त्योहार के इस दौर में जांजगीर-चांपा का पूरा बाजार गुलजार रहा।

विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे आयोजन न केवल धर्म और आस्था को मजबूत करते हैं बल्कि पर्यटन की दृष्टि से भी बड़ी भूमिका निभाते हैं। 140 फीट ऊँचे पंडाल और 35 फीट की दुर्गा प्रतिमा ने पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया है। सोशल मीडिया पर भी इसकी तस्वीरें और वीडियो वायरल हो रहे हैं। लोग इस आयोजन की तारीफ कर रहे हैं और इसे नवरात्रि की भव्यता का असली प्रतीक बता रहे हैं।

नवरात्रि का यह आयोजन यह साबित करता है कि आस्था और परंपरा के संगम से किस तरह सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और प्रस्तुत किया जा सकता है। जांजगीर-चांपा का यह भव्य पंडाल और विशाल दुर्गा प्रतिमा आने वाले वर्षों के लिए भी एक प्रेरणा बन गई है। यह न केवल माँ दुर्गा की शक्ति और श्रद्धा का प्रतीक है बल्कि भारतीय संस्कृति की भव्यता और सामूहिकता का भी अद्भुत उदाहरण है।

जांजगीर-चांपा का यह आयोजन नवरात्रि के अवसर पर धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक भव्यता और सामाजिक एकता का अनोखा संगम बनकर उभरा है। 140 फीट ऊँचे पंडाल में विराजमान 35 फीट की माँ दुर्गा की प्रतिमा श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र बनी हुई है और आने वाले दिनों में भी यहाँ बड़ी संख्या में भक्तों के पहुँचने की उम्मीद है। यह आयोजन न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी चर्चा का विषय बन चुका है और इसे छत्तीसगढ़ के सबसे भव्य नवरात्रि आयोजनों में शुमार किया जा रहा है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.